ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-4* May- 2021
Innovation The Research Concept

संगीत मारतंड पंडित जसराज

Sangeet Martand Pt. Jasraj

Paper Submission: 02/05/2021, Date of Acceptance: 14/05/2021, Date of Publication: 25/05/2021

रणजीत सिंह
कार्यकारी प्रिंसीपल,
संगीत गायन विभाग,
भाई संगत सिंह खालसा
कॉलेज बंगा, शहीद भगत
सिंह नगर, पंजाब, भारत

सारांश

20 जनवरी, सन् 1930 को हिसार (हरियाणा राज्य) के एक परंपरावादी ब्राहम्ण परिवार में जन्मे पंडित जसराज ने संगीत की प्राथमिक शिक्षा बड़े भाई पंडित मनी राम से प्राप्त की। इनका सबसे पहला एकल गायन सन् 1952 में नेपाल दरबार में हुआ। इसके पश्चात् देश के कोने–कोने में हुए संगीत सम्मेलनों में भाग लिया। कई टी.वी. धारावाहिक बनाए। सन् 2009 में उन्होंने 'संगीत मारतंड पंडित जसराज' फिल्म और सन् 2010 में मराठी फिल्म बनाई जिसमें पंडित जसराज और लता मंगेशकर ने मराठी भाषा में गाया। संगीत के क्षेत्र में दिए योगदान के लिए पंडित जी को समय–समय पर कई पुरस्कार मिले जिनमें से 'पद्मश्री', 'संगीत नाटक अकादमी', 'संगीत मारतंड', 'पद्मभूषण' आदि प्रमुख हैं। मेवाती घराने के इस प्रसिद्ध कलाकार की सुरीली आवाज हमेशा संगीत प्रेमियों के दिलों को छूती रहेगी।

Pt. Jasraj born in January 20,1930 at Hisar (Hariana state) in traditional Brahman family and he took primary education in music from his elder brother Pt. Mani Ram. He presented his solo song in 1952 at empire of Nepal. After that he pariticipated in all music Confrences held at every part of the Country. He prepared many T.V. serials. In 2009, He prepared a film named "Sangeet Mattand" Pt.Jasraj, and in 2010, He made a Marathi firm in which he and Lta Mangeshkar sang songs in Marathi Language. He attained many awards time to time for his contribution in the field of music such as 'Padam Sri', Sangeet Natak Akadmi', 'Sangeet Martand' 'Padam Bhushan'. The Sweet voice of this famous singer of 'mevati Gharana' will touch the hearts of music lovers.

मुख्य शब्द : शास्त्री संगीत, तबला, मेवाती घराना, ध्रुपद, ताल ।
Classical Music, Tabla, Mevati Gharana, Dhruvapada, Taal.

प्रस्तावना

संगीत मारतंड पंडित जसराज मेवाती घराने के सुरीले शास्त्री गायक हुए हैं। उन्होंने सुर के साथ–साथ साहित्य को भी उचित महत्व दिया । 'ओम श्री अनंत नारायण' के भावपूर्ण अलाप के साथ जब वह गायन का श्री गणेश करते तो भक्ति का आनंद–दायक वातावरण अपने आप उत्पन्न हो जाता है। पंडित जी ध्रुपद गायिकी और लय ताल के साधक रहे हैं। इसलिए उनके गायन में गमक का प्रयोग आमतौर पर देखने को मिलता है।

श्री परम हंस अहूजा और श्री संजय वर्मा अनुसार, ''पंडित जसराज का जन्म हरियाणा राज्य के हिसार जिले में 20 जनवरी, सन् 1930 को एक परंपरावादी ब्राहम्ण परिवार में हुआ। इनके पिता जी का नाम पंडित मोतीराम था जो कि कश्मीर राज्य के दरबारी गायक थे। पंडित जसराज जब लगभग 4 वर्ष के थे, उसी दौरान पिता मोतीराम जी का देहांत हो गया। ठीक इसी दिन इनकी नियुक्ति हैदराबाद के आखिरी निजाम के दरबार में राज गायक के रूप में होनी थी।''[1] पिता की मृत्यु के पश्चात् परिवार के पालन पोषण की जिम्मेवारी बड़े भाई पंडित मनी राम के कंधों पर आ गई। उन्होंने अपने भाईयों पंडित प्रताप नारायण को गायन और चार वर्षीय जसराज को तबले की शिक्षा देनी शुरू कर दी। बालक जसराज जल्दी तबला बजाने में निपुण हो गए और बड़े भाई पंडित मनी राम के साथ संगीत समारोहों में जाने लगे। इसी दौरान उन्होंने अनुभव किया कि तबला वादक को आदर की दृष्टि से नहीं देखा जाता बल्कि गायक को ही प्रशंसा मिलती है। इसलिए उन्होंने 14 वर्ष की उम्र में गायन की शिक्षा लेने का फैसला किया। उन्होंने प्रण किया कि जब तक वह गाना सीख नहीं जाते, अपने बाल नही कटवाएंगे। छोटे भाई जसराज की इच्छा के अनुसार पिता समान बड़े भाई पंडित मनी राम ने उनको गायन की शिक्षा देनी आरंभ कर दी। हर रोज़ छः–छः घण्टे के रियाज के साथ बालक जसराज के गले में मेवाती

घराने की विशेषताएँ और बारीकीयाँ उतरने लगीं। प्रतिदिन के अभ्यास ने बालक जसराज का गला मधुर और सुरीला बना दिया। आखिर वो दिन भी आ गया जब बतौर गायक उनका पहला प्रदर्शन आल इंडिया रेडियो पर राग कौंसी कानड़ा के रूप में प्रसारित हुआ। इसके पश्चात् उन्होंने बाल कटवा दिए और संगीत गायन के क्षेत्र में लगातार कई घण्टे मेहनत करने लगे। सात वर्ष के निरंतर अभ्यास ने पंडित जी को तबला वादक से कुशल गायक बना दिया। संगीत गायन में उन्होंने आगरा घराने के स्वामी वल्लभ दास जी और जैवंत सिंह वधेला से भी शिक्षा ली। डॉ0 देविन्द्र कौर के अनुसार, ''कहा जाता है कि सन् 1960 में एक वार जब पंडित जसराज हस्पताल में पटियाला घराने के सुप्रसिद्ध उस्ताद बड़े गुलाम अली खां को देखने गए तो खान साहिब ने उनको अपना शिष्य बनाने के लिए पेशकश की परंतु पंडित जसराज ने यह कहते हुए मना कर दिया कि वह पहले ही पंडित मनी राम जी के शिष्य है।''[2]

सन् 1950 के करीब पंडित जी आकाशवाणी पर अपना प्रोग्राम देने के इलावा अपने बड़े भाई और गुरू पंडित मनी राम के साथ बड़े–बड़े संगीत सम्मेलनों में जुगलबंदी की पेशकारी करने लग पड़े । हरीशचंद्र श्री वास्तव के अनुसार, ''पंडित जसराज का सर्वप्रथम सार्वजनिक कार्यक्रम सन् 1952 में नेपाल दरबार में हुआ । उस कार्यक्रम से पंडित जसराज का दिल खुल गया और 'स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन' बंबई का अगला कार्यक्रम बहुत सफल रहा। धीरे–धीरे संगीत जगत में धूम मच गई।[3] सन् 1960–1975 तक लगातार पंडित जी ग्वालियर के तानसेन संगीत समारोह में अपनी पेशकारी देते रहे। पंडित जी ने हवेली संगीत के क्षेत्र में काफी खोज कार्य किए। बाबा श्याम मनोहर गोस्वामी महाराज की नजदीकीयों की गर्माहट के एहसास में इन्होंने बहुत सारी बंदिशों की रचना की। डॉ0 देविन्द्र कौर के अनुसार, ''भारतीय शास्त्री संगीत को पंडित जसराज का विशेष योगदान, उनकी जुगलबंदी का एक नया और खास अंदाज है, जो कि प्राचीन मूर्च्छना प्रणाली पर आधारित है। एक आदमी और औरत जो कि अपने–अपने स्केल पर गाते हैं, जिस कारण मूर्च्छना प्रणाली के अनुसार यह एक ही राग भिन्न–भिन्न सुनाई देता है। उनकी इस खास जुगलबंदी को पंडित जसराज के नाम पर 'जसरंगी' कहा जाता है।''[4]

पंडित जसराज की शादी प्रसिद्ध फिल्म निर्माता वी.शांताराम की सपुत्री मधुरा के साथ सन् 1962 में हुई। शादी के पश्चात् दोनो कुछ समय कलकत्ता में रहे । सन् 1963 में पक्के तौर पर बंबई आकर रहने लगे। यहां आकर आपने जुगलबंदी गाना छोड़ के एकल गायन शुरू कर दिया और बुलंदियों को छुआ। इनका एक पुत्र शारंगदेव पंडित और पुत्री दुर्गा जसराज है। दुर्गा जसराज खुद एक उद्घोषक, टी.वी. उद्घोषक और एक पेशकर्ता है। इनकी पत्नी मधुरा ने बच्चों के कई नाटक और दस्तावेजी फिल्में निर्देशित की हैं। कई टी.वी. धारावाहिक बनाए हैं। सन् 2009 में उन्होंने 'संगीत मारतंड पंडित जसराज' फिल्म और सन् 2010 में मराठी फिल्म बनाई जिस में पंडित जसराज और लता मंगेशकर ने मराठी भाषा में गाया। प्रसिद्ध संगीत निर्देशक जतिन पंडित और ललित पंडित इनके भतीजे और सुलक्षणा पंडित भतीजी है।

पंडित जसराज के शिष्यों की सूची भी लम्बी है। डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग के अनुसार, ''पंडित जसराज ने गुरू शिष्य प्रणाली के द्वारा अनेक शिष्य तैयार किए हैं, जिनमें साधना धानेकर (जिस को 'साधना' सरगम के नाम से जाना जाता है), पद्मजा, फेनानी, गिरीश, क्षीरसागर, पुत्र शारंगदेव (संगीत निर्देशक), सीमा व श्वेता झावेरी, संजीव अभ्यंकर, रतन शर्मा, तृप्ति मुखर्जी, गार्गी सिद्वान्त और वाइलिन वादक कलाराम नाथ के नाम उल्लेखनीय हैं। पंडित जसराज स्कूल ऑफ म्यूज़िक फाउण्डेशन (वेंकूवर, कनाडा) और पंडित जसराज ऑफ म्यूज़िक फाउण्डेशन (न्यू–जर्सी, अमेरिका) जैसी संस्थाओं के माध्यम द्वारा आपके कुछ शिष्य विदेशों में भी संगीत का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। कनाडा की टोरन्टो यूनिवर्सिटी भारतीय संगीत के अध्ययन के लिए पंडित जसराज के नाम से छात्रवृति की स्थापना कर चुकी है। आप ऐसे पहले भारतीय संगीतकार हैं, जिसे किसी विदेशी यूनिवर्सिटी ने यह सम्मान दिया है।''[5]

पंडित जी को अनेक सम्मान और उपाधियों के साथ सम्मानित किया गया जिनका विवरण इस प्रकार हैः–

1. सन् 1963 में मुंबई रेडियो से 'ऐ' ग्रेड कलाकार का दर्जा मिला ।
2. सन् 1975 में आप को भारत सरकार की तरफ से 'पद्मश्री' पुरस्कार के साथ सम्मानित किया गया ।
3. सन् 1976 में हरियाणा सरकार की तरफ से आप को 'संगीत मारतंड' की उपाधि के साथ सम्मानित किया गया।
4. सन् 1987 में 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार के साथ सम्मानित किया गया।
5. 26 जनवरी, 2000 को भारत सरकार की तरफ से देश का सर्वश्रेष्ठ और सर्व उच्च नागरिक सम्मान 'पद्मभूषण' दिया गया ।
6. न्यूयार्क (अमेरिका) की वैदिक हैरीटेज संस्था द्वारा 'संगीत सम्राट' की उपाधि प्रदान की गई।
7. इसके इलावा मध्य प्रदेश सरकार की तरफ से 'संगीत कला रत्न', उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से 'स्वामी हरी दास संगीत रत्न', हरियाणा सरकार की तरफ से 'रसराज' की उपाधि, महाराष्ट्र सरकार की तरफ से 'महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार', और 'दीनानाथ मंगेशकर अवार्ड', मध्य प्रदेश सरकार की तरफ से 'अलाऊदीप संगीत रत्न' का सम्मान दिया गया।

डा0 मायाटार के अनुसार,

''पडित जी कहा करते थे कि सब से पहली बात यह हैं हमारे घराने में संगीत को ईश्वर मानते हैं हम मंच को मॉ सरस्वती का आसन मानतें हैं। उनकी इजाजत लेकर मंच पर बैठते हैं। हम सुरो को प्यार करते हैं। हमारा घराना शब्दो को ही महत्व देता हैं। सिर्फ सुरो को गाने से राग तो बन जाता हैं। पर राग का जो भेद हैं, उस तक पहुचने के लिए शब्द मदद करतें हैं।''[6]

अध्ययन का उद्देश्य

इस विषय का चयन (चुनाव) करने के पीछे मेरा उद्देश्य मेवाती घराने के प्रसिद्ध गायक पंडित जसराज की गायिकी और कार्यों को सामने लाना है।

शोध प्रविधि

पुस्तकों एवं ग्रंथों का पठन, शोध पत्रों का अध्ययन ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि छोटी उम्र में ही पिता की मृत्यु होने के बावजूद बड़े भाई पंडित मनी राम की देख रेख में सख्त मेहनत करके इन्होंने तबला वादन और शास्त्री संगीत के क्षेत्र में विशेष स्थान बनाया। आगरा घराने के स्वामी वल्लभ दास जी और जैवंत सिंह वधेला से भी पंडित जी ने संगीत सीखा। हवेली संगीत के क्षेत्र में काफी खोज कार्य किए। देश के कोन–कोने में होने वाले संगीत सम्मेलनों में भाग लेकर अपनी गायकी का लोहा मनवाया और संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया । पंडित जी ने कई फिल्मों में गाया। संगीत के क्षेत्र में किए कार्यों करके भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने आप को कई पुरस्कारों के साथ सम्मानित किया। आप के अनेक शिष्य आज भी संगीत के क्षेत्र में कार्यशील हैं। मेवाती घराने के इस सुरीले गायक पंडित जसराज की सुरीली गायकी हर संगीत प्रेमी के दिलों को छूती रहेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्री परम हंस अहूजा, श्री संजय वर्माः समाजिक विज्ञान पत्र, अंक 59, भाग पहला, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पन्ना 107*
2. *डॉ0 देविन्द्र कौरः संगीत रूप भाग 1., संगीतांजली पब्लिकेशन, 118–मालवा कालोनी, पटियाला, पन्ना 140*
3. *हरीशचंद्र श्री वास्तवः हमारे प्रिय संगीतज्ञ, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, पन्ना 38*
4. *डॉ0 देविन्द्र कौरः संगीत रूप भाग 1., संगीतांजली पब्लिकेशन, 118–मालवा कालोनी, पटियाला, पन्ना 140*
5. *डॉ0 लक्ष्मी नारायण गर्गः भारत के संगीतकार, संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश, पन्ना 405*
6. *डा0 मायाटारः संगीत संपदा, कनिशका प्रकाश को नई दिल्ली, पन्ना 76,77,*